नगर व महाविद्यालय का परिचय

अमरोहा जनपद, उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद मण्डल का एक प्रमुख शहर है। यह जनपद सन् 1997 में ज्योतिबा फुले नगर के नाम से अस्तित्व में आया। अमरोहा जिले का नाम उर्दू शब्द आमरोह से निकला है। जो यहाँ के प्रसिद्ध आम और रोहू (मछली) के नाम पर पड़ा। अमरोहा की सरजमी फिल्म निर्देशक कमाल अमरोही, हास्य अभिनेत्री टुनटुन और मशहूर शायर जॉन एलिया की जन्म भूमि के रूप में भी प्रसिद्ध है।

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय जनपद का एकमात्र अनुदानित महाविद्यालय है। 1960 में स्थापित इस महाविद्यालय में कला, वाणिज्य, विज्ञान एवं व्यावसायिक विषयों में स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। इसके साथ ही विभिन्न विषयों में उच्च कोटि के शोधकार्य एवं सामाजिक व सांस्कृतिक गतिविधियाँ भी संचालित हो रही हैं। महाविद्यालय के सभी प्राध्यापकों के साहित्यिक गतिविधियों में संलग्न होने के साथ-साथ विभिन्न राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय पत्र-पत्रिकाओं में शोध पत्र भी प्रकाशित होते रहते हैं। महाविद्यालय से शिक्षा प्राप्त कर अनेकानेक विद्यार्थी विभिन्न सेवाओं में उच्च पदों पर चयनित होकर विभाग एवं महाविद्यालय का नाम रोशन कर राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

पंजीकरण शुल्क रु. 800/- प्राध्यापक तथा रु. 500/- शोधार्थी, रु.200/- विद्यार्थी नकद/डिमांड ड्राफ्ट/UPI द्वारा प्रेषित करें।

खाता संख्या : 34348910172

IFSC : SBIN0018144

भारतीय स्टेट बैंक, जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज शाखा, अमरोहा।

प्राचार्य, जे०एस० हिन्दू (पी०जी०) कॉलेज, अमरोहा

सम्पर्क सूत्र

https://www.jshpgc.ac.in/
E-mail: hindiseminarjsh@gmail.com
Facebook: https://bit.ly/3rm1Fmv
Twitter: https://twitter.com/j_amroha

पंजीकरण लिंक : https://forms.gle/9t3xc9T3mPKML4B48

व्हाट्सएप ग्रुप लिंक : https://forms.gle/ghSaXPkL5UdiUHXF7

जगदीश सरन हिन्दू स्नातकोत्तर महाविद्यालय अमरोहा

एवं

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

कीरति भनिति भूति भलि सोई।
सुरसरि सम सब कहँ हित होई।।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी

लोक साहित्य एवं संस्कृति के विविध आयाम

दिनांक : 28 व 29 जनवरी, 2025
(मंगलवार व बुद्धवार)

प्रेरणा

श्री राज बहादुर
निदेशक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

डॉ० अमिता दुबे
प्रधान सम्पादक, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ

माननीय प्रोफेसर के०पी० सिंह
कुलपति, एम.जे.पी. रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली

माननीय प्रोफेसर सचिन माहेश्वरी
कुलपति, गुरु जम्भेश्वर विश्वविद्यालय, मुरादाबाद

संरक्षक

श्री संजय मालीवाल
प्रधान, प्रबंध समिति

श्री योगेश कुमार जैन
मंत्री, प्रबंध समिति

प्रोफेसर वीर वीरेन्द्र सिंह
प्राचार्य

संयोजक

डॉ० बबलू सिंह
एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
संयोजक - राष्ट्रीय संगोष्ठी
मोबाइल : 9412619392/7505086181/8307601090

डॉ० विशेष कुमार राय
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
समन्वयक - राष्ट्रीय संगोष्ठी
मोबाइल : 9013743215/9412857035

आयोजक : हिन्दी विभाग

संगोष्ठी की विषय वस्तु

सम्माननीय महोदय/महोदया,

मनुष्य का आरंभिक जीवन नितान्त संघर्षमय था। जीवन संघर्ष से उपजे अनुभवों को सहेजने व आगे बढ़ाने की लालसा ने ही लोक कला के विभिन्न माध्यमों को जन्म दिया। लोक साहित्य भी इसी कड़ी में आता है। जीवन की आरंभिक अवस्था से ही श्रम एवं कला अभिन्न रूप से जुड़े रहे हैं। सत्य यही है कि शुरूआती कलाएं श्रम के साथ ही उत्पन्न हुई एवं धीरे-धीरे विकसित होती गईं। मानव द्वारा अपने अस्तित्व एवं अस्मिता को बचाए रखने की चाह, आजीविका के लिए किया गया संघर्ष, विभिन्न उपकरणों का आविष्कार एवं उसके द्वारा की गई यात्राएं इत्यादि ही कला तथा साहित्य का केन्द्र बिन्दु बने। अपने इन्हीं अर्जित अनुभवों को मनुष्य ने गीतों में गाया, भित्ती चित्रों में उकेरा और पीढ़ी-दर-पीढ़ी किस्से-कहानियों एवं नाटकों के रूप में सुनाया। इस प्रकार मनुष्य जीवन-संघर्ष के माध्यम से लोक साहित्य एवं संस्कृति का रूप अपना आकार लेता गया। प्रकृति, उसका बदलता रूप तथा उससे सामंजस्य स्थापित करने की चाह लोक साहित्य-संस्कृति में आरंभ से ही मौजूद रही है। वास्तव में जीवन की शुरूआत से लेकर सभ्यता के निर्माण तक की कहानी लोक साहित्य-संस्कृति में देखी जा सकती है।

लोक समुदाय की संस्कृति ही लोक संस्कृति होती है। इसमें लोक जीवन के समस्त क्रिया-कलाप निहित होते हैं। लोक जीवन की परंपरा, आस्था, विश्वास, रूढ़ियाँ, पर्व, किस्से-कहानियाँ, नृत्य, भाषा एवं विभिन्न मिथक इसी के अन्तर्गत आते हैं। इसी प्रकार के विभिन्न स्वरूप लोक संस्कृति को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। यदि लोक साहित्य एवं संस्कृति का समग्रता से अध्ययन किया जाए तो यह तथ्य उभरकर आता है कि सदियों से अभिजन साहित्य की जड़ें लोक साहित्य-संस्कृति रूपी खाद-पानी पाकर ही मजबूती प्राप्त करती आई हैं। दरअसल शास्त्र की यात्रा का आरंभिक बिन्दु लोक ही है। लोक तत्व ही हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का आधार हैं।

इसलिए लोक साहित्य एवं संस्कृति के विविध आयामों के बारे में एक गंभीर अकादमिक संवाद के लिए आप सभी सादर आमंत्रित हैं। यह संवाद इसलिए भी आवश्यक हो जाता है कि आज जब हम भारतीय ज्ञान परंपरा को स्थापित करने में लगे हुए हैं तो ज्ञान परम्परा की निरंतरता में लोक साहित्य एवं संस्कृति की भूमिका चिन्हित की जा सके। निम्न उपविषयों के माध्यम से हम इस अकादमिक संवाद को अधिकाधिक समाजोपयोगी बनाने का प्रयास करेंगे।

उपविषय

1. लोक साहित्य : अवधारणा एवं स्वरूप
2. लोक साहित्य : उद्भव एवं विकास
3. लोक साहित्य में पर्यावरण चिंतन
4. लोक साहित्य एवं धार्मिक मान्यताएं
5. वाचिक परंपरा एवं लोक संस्कृति
6. लोक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना
7. लोक साहित्य : चुनौतियाँ एवं संभावनाएं
8. लोक साहित्य में शैक्षिक दर्शन
9. लोक साहित्य एवं संस्कृति के संरक्षण व संवर्धन के उपाय
10. लोक साहित्य एवं संस्कृति में पुरुषों की भूमिका
11. लोक साहित्य एवं संस्कृति का ग्रामीण परिप्रेक्ष्य
12. लोक साहित्य एवं संस्कृति का शैक्षिक परिप्रेक्ष्य
13. लोक साहित्य एवं संस्कृति का राजनीतिक परिप्रेक्ष्य
14. लोक संस्कृति : अवधारणा एवं स्वरूप
15. लोक संस्कृति का बदलता स्वरूप एवं चुनौतियाँ
16. लोक साहित्य एवं संस्कृति का सामाजिक पक्ष
16. लोक संस्कृति एवं लोक नाट्य परंपरा
18. वर्तमान में लोक साहित्य की प्रासंगिकता
19. लोक साहित्य में आर्थिक चिंतन
20 इतिहास लेखन में लोक साहित्य
21. लोक साहित्य : भौगोलिक स्थिति
22. लोक साहित्य एवं संस्कृति में महिलाओं की भूमिका
23. लोक साहित्य एवं संस्कृति का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
24. लोक साहित्य एवं संस्कृति का शहरी परिप्रेक्ष्य
25. लोक साहित्य एवं संस्कृति का मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य
26. आदिवासी लोक परंपरा एवं संस्कृति
27. विभिन्न भाषाओं एवं बोलियों का लोक साहित्य
28. दलित लोक परंपरा एवं संस्कृति

(उपर्युक्त विषय से सम्बन्धित अन्य शीर्षक भी सम्मिलित किए जाएंगे।)

कृपया सेमिनार/राष्ट्रीय संगोष्ठी में सम्मिलित होने की सहर्ष सहमति प्रदान कर अपना शोध पत्र अधिकतम **(2500 से 3000 शब्दों में)** हमारे ई-मेल **hindiseminarjsh@gmail.com** पर **सॉफ्टकापी** में **KrutiDev010 में 18 जनवरी 2025 तक** प्रेषित करने का कष्ट करें; ताकि उच्च स्तरीय शोध-पत्र को **ISBN/ISSN** पुस्तक/शोध पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके।

आपकी सुविधा हेतु उपविषय ऊपर दिए गए हैं। कृपया अपने शोध-सारांश में विषय के उद्देश्य, प्रयुक्त विधि तन्त्र एवं निष्कर्ष का उल्लेख अवश्य करें।

संयोजक मण्डल

डॉ० बीना रुस्तगी	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष हिन्दी
डॉ० सविता	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
श्री रणदेव सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
डॉ० ऋतुराज यादव	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
डॉ० मौ० जावेद	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
श्री राजीव कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग

आयोजक मण्डल

डॉ० अनिल रायपुरिया	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष वाणिज्य।
श्री निखिल कुमार दास	एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष मनोविज्ञान।
डॉ० मनन कौशल	प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष अर्थशास्त्र।
डॉ० हरेन्द्र कुमार	एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष समाजशास्त्र।
डॉ० आभा सिंह	एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शिक्षाशास्त्र।
डॉ० मनमोहन सिंह	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष राजनीति शास्त्र।
डॉ० संगीता धामा	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष भूगोल।
श्री हिमांशु शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष अंग्रेजी।
डॉ० अरविन्द कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष संस्कृत।
श्री राज किशोर	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष इतिहास।
श्री योगेन्द्र कुमार	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष शारीरिक शिक्षा।
श्री मौहम्मद मूसा	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष उर्दू।
डॉ० सौरभ अग्रवाल	असिस्टेंट प्रोफेसर व निदेशक श्रीराम विज्ञान संकाय
डॉ० पवन कुमार गेरा	असिस्टेंट प्रोफेसर, गणित विभाग।
डॉ० पीयूष शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर, इतिहास विभाग।
डॉ० राजीव प्रकाश	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज टीटीएम विभाग।
डॉ० विकास मोहन	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज रक्षा अध्ययन विभाग।
श्रीमति ज्योति	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज गृहविज्ञान विभाग।
श्री मयंक अरोड़ा	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज बीबीए विभाग।
श्री अमित कुमार भटनागर	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज बीसीए विभाग।
डॉ० मनीष टंडन	असिस्टेंट प्रोफेसर एवं इंचार्ज बी.कॉम. आनर्स विभाग।

एवं समस्त महाविद्यालय परिवार